International Journal of Advance Research in Science and Engineering
Volume No. 11, Issue No. 07, July 2022
www.ijarse.com
IJARSE
ISSN 2319 - 8354

लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)

Manisha Panjwani[1], Dr. Deepak Nema[2]

[1] Ph.D. Scholar, Dept of Commerce
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, M.P.
[2] Professor, Dept. of Commerce
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, M.P.

भूमिका (Introduction):-

उद्यमिता से आशय ऐसी योग्यता से है, जो जोखिम तथा अनिश्चितता को वहन करने तथा जिसके द्वारा कुछ विशिष्टता प्रदान करने का प्रयास किया जाता है ।"उद्यमिता व्यवसाय में निहित अनेक प्रकार की जोखिमों को उठाने एवं अनिश्चितताओं का सामना करने की योग्यता एवं प्रवृत्ति है।"जिन व्यक्तियों में जोखिम वहन करने की इच्छा होती है,वे "उद्यमी" कहलाते हैं।

विकासशील अर्थव्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्रों की छोटी बचत ,आर्थिक स्थिति को सुधारने में बहुत योगदान दे रही है। भारत में लघु व सूक्ष्म उद्योगों की स्थापना से विकासशील अर्थव्यवस्था के सुधार में गति आती है ,जिसमें महिला सशक्तिकरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वैश्विक आयाम पर महिलाएं एक तिहाई से अधिक व्यवसाय रखती हैं और कार्यबल का चौथा हिस्सा लेती हैं ।यह एक निर्विवाद तथ्य है कि विश्व की लगभग आधी आबादी का गठन करने वाली महिलाओं के लिए आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त हुए बिना विकास असंभव है।महिलाएं अपने परिवारों के अस्तित्व का साधन है लेकिन आमतौर पर देखें तो इन्हें सीढ़ी के निचले पायदान पर रखा जाता है जबकि पुरुष उद्यमी की तुलना में महिला उद्यमी कठिन परिस्थितियों में भी काम करते हुए पाई गई हैं जैसे राजनीतिक अस्थिरता, खराब बुनियादी ढांचे। उच्च उत्पादन लागत और कई गैर कारक में महिला ने सफलतापूर्वक कार्य दिया है जब महिलाएं सशक्त होती हैं तो पूरे समाज को लाभ होता है महिला अपने कार्य को पूरण करने हेतु सदैव सशक्त रहती हैं।परंतु फिर भी उनके आत्मविश्वास में कहीं ना कहीं कमी बनी रहती है ।

"महिला उत्थान" तथा "महिला स्वतंत्रता की बात करो" जैसी योजनाओं के कारण महिला की स्थिति में सुधार हो रहा है। महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं। विशेषकर महिलाओं में प्रबंधन का गुण (जो कि उद्यम के संचालन के लिए आधारभूत होता है) तो जन्मजात होता ही है क्योंकि जितनी खूबी से वह घर का प्रबंधन करती हैं उससे सभी परिचित हैं।

उपरोक्त कथन हमारे देश के आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका के बारे में संक्षिप्त दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

उद्यम की अवधारण (concept of entrepreneur):-

उद्यमी शब्द फ्रेंच शब्द Entrependre से निकला है, और 16वीं शताब्दी की शुरुआत में इसे सैन्य अभियानों में लगे व्यक्तियों पर लागू किया गया था। 18 वीं शताब्दी के दौरान उद्यमी शब्द का प्रयोग अर्थव्यवस्था को संदर्भित करने के लिए किया गया था ।

"साहस की भावना ही व्यक्ति को उद्यमी बनाती है।" सामान्यतः 'उद्यमी' उस व्यक्ति को कहा जाता है जो नया उपक्रम प्रारंभ करता है, आवश्यक संसाधनों को जुटाता है तथा व्यवसाय की क्रियाओं का प्रबंध और नियंत्रण करता है।

केंटिलियन के अनुसार- "उद्यमी वह एजेंट होता है जो उस क्षण को खरीदता है जिस पर वह काम करता है, वह अपनी लागत के लिए खुद कार्य करता है।"

ड्रकर के अनुसार- "उद्यमी वह है जो हमेशा खोज करता है, परिवर्तन करता है, परिवर्तन का जवाब देता है और अवसर के रूप में इसका शोषण करता है।

व्यवसाय. ⟹ **उद्यमिता** ⟹ **उद्यम**

(Entrepreneur) **(Entrepreneurship).** **(Enterprise)**

⇩ ⇩ ⇩

व्यक्ति **कार्यवाही की प्रक्रिया** **वस्तु**

(person) **(process of action)** **(object)**

- उद्यमी एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने उद्यम का विकास करता है।
- यह मध्यम जोखिम लेने वाला और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अनिश्चितता के तहत कार्य करता है।
- उद्यमी में प्रतिस्पर्धा की भावना उपस्थित होती है।
- उद्यम से संबंधित कार्यों को करने की व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेता है।
- भविष्य की ओर उन्मुख होता है ।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उद्यमी की दृढ़ता बनी रहती है ।
- उद्यमी किसी स्थिति को अवसर में बदलने की क्षमता रखता है।

महिला उद्यमी की अवधारणा (concept of women entrepreneurs)-

सृष्टि के प्रारंभ से ही महिलाएं मानव पूंजी के निर्माण में प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में रही हैं ।यद्यपि महिलाएं लंबे समय तक घरेलू क्रियाओं से ही संबंध रहे हैं, लेकिन परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रिया के साथ उसने 'उद्यम' की स्थापना के कार्य में योगदान देना प्रारंभ किया है। सामान्यतः जो महिला किसी भी प्रकार की सेवा व वस्तु का उत्पादन करती है तो उसे 'महिला उद्यमी' कहते हैं।

भारत सरकार के डेवलपमेंट कमिशनर द्वारा महिला उद्यमी की दी गई परिभाषा निम्नलिखित हैं :-

1.वह उपक्रम महिला उद्यमी के स्वामित्व का हो अर्थात न्यूनतम 51% पूंजी उस महिला की हो।

2.वह उपक्रम महिला द्वारा संचालित हो।

3. उस उपक्रम में कार्यरत कर्मचारियों में 50% महिलाएं हों।

महिला उद्यमियों को महिलाओं का महिलाओं के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका नेतृत्व महिलाओं द्वारा किया जाता है महिलाओं को उद्यम में 51 फ़ीसदी रोजगार मिल रहा है यह एक निर्विवाद तथ्य है कि विश्व की लगभग आधी आबादी का गठन करने वाली महिलाओं के लिए आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त हुए बिना विकास असंभव है।

उद्यमिता अथवा उद्यम किसी वर्ग, जाति या लिंग भेद की बैसाखियों का मोहताज नही होता है,उसके लिए आवश्यक उद्यमियों के गुण ही सर्वथा वह सर्वदा पर्याप्त होते हैं और इन्हीं गुणों की पहचान कर उद्यमिता का विकास करना हर उद्यमी का कर्तव्य होता है। स्वयं का यह आत्म अवलोकन व विकास की भूख ही उद्यमिता के सर्वोपरि उपकरण होते हैं। प्राचीन परंपराओं को निभाते हुए वर्तमान समाज आज असंतुलन के उस दौर में खड़ा है ,जहां अभी भी महिलाओं को समाज में अपनी बराबरी पर खड़े पाए जाने पर पुरुष असुविधा महसूस करता है। वस्तुतः समस्या प्रवृत्ति की है और यह प्रवृत्ति वह

प्रवृत्ति है, जिसके चलते पुरुष,महिलाओं पर उन्हें आश्रित वर्ग की पहचान देने का प्रयास किया जाता है। जिसके फलस्वरूप उसे आश्रयदाता की गर्वनुभूति होती है ।आवश्यकता है पुरातन के स्थान पर नूतन के स्वागत करने की, साथ ही एक सकारात्मक प्रोत्साहन की जिससे महिलाएं भी समाज व परिवार की प्रगति में एक सुदृढ़ सामाजिक आधार की भागीदारी में बराबर का हिस्सा रखती हों ।

उद्यमशील क्षेत्र में महिलाओं के सफल होने के गुण (The Attributes of Women To Succeed In The Entrepreneurial Field):-

पुरुष प्रधान समाज में उद्यमशील क्षेत्र में महिलाओं के सफल होने के लिए निम्न गुणों का होना आवश्यक है:-

- शिक्षित एवं सामर्थ्यवान होना ।
- वस्तुस्थिति से परिचित होना।
- स्वयं की योग्यता को प्रकट करने की क्षमता का होना।
- आत्मविश्वास का होना
- धैर्य रखना
- आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनना
- चुनौती स्वीकार करने की क्षमता
- कैरियर अभिमुखी होना
- व्यक्तित्व विकसित एवं नियंत्रित करना

इन्हें अपनाकर महिला उद्यमी जॉब में सफल हो सकती है। पुरुष की तुलना में महिला में धैर्य एवं संवेदनशीलता ज्यादा होती है। महिलाओं को उद्योग लगाने में ज्यादा सफलता मिल सकती है, बशर्ते उन्हें पुरुषों के बराबर कार्य करने की स्वछंदता मिले एवं पुरुष जैसा वातावरण भी महिलाओं को प्रदान किया जाए। समय पर समुचित संसाधन नियोजित रूप से उपलब्ध कराए जाएं। अगर समाज व स्थानीय नागरिक भी उसकी सहायता करें तो भारत की 50% जनसंख्या जो अभी तक देश की प्रगति में ज्यादा योगदान नहीं कर पा रही है वह कंधे से कंधा मिलाकर भारत के सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ाने में सहायक हो सकती है।

लघु एवं छोटे उद्योगों की अवधारणा (Meaning and Concept of Small Scale Industries):-

लघु उद्योग वे उद्योग होते हैं जिसमें विनिर्माण ,सेवाएं प्रदान की जाती हैं। उत्पादन छोटे पैमाने पर किए जाते हैं ।लघु उद्योग भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह उद्योग

मशीनरी, संयंत्रों और उद्योगों में एकमुश्त निवेश करते हैं, जो स्वामित्व के आधार पर हो सकते हैं तथा खरीद या पट्टे के आधार पर हो सकते हैं।

◆ यह विनियोजित राशि 25 लाख से 10 करोड़ तक होनी चाहिए।

◆सेवा क्षेत्रों के उद्यमियों की दशा में यह विनियोजित राशि 10 लाख से 5 करोड तक होनी चाहिए।

मूल रूप से छोटे पैमाने के उद्योगों में छोटे उद्यम शामिल होते हैं, जो अपेक्षाकृत छोटी मशीनों और कुछ श्रमिकों व कर्मचारियों की मदद से वस्तुओं और सेवाओं का निर्माण करते हैं। लघु उद्योग भारत जैसे विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा है ।यह आमतौर पर श्रम गहन उद्योग है इसीलिए यह बहुत अधिक रोजगार पैदा करते हैं ।लघु उद्योग वित्तीय और सामाजिक दृष्टिकोण से अर्थव्यवस्था का एक बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

लघु उद्योग के उदाहरण जैसे बेकरी, मोमबत्तियां बनाना, पानी की बोतल स्कूल की स्टेशनरी, चमड़े की बेल्ट, छोटे खिलौने, कागज के बैग ,जेरॉक्स ,प्रिंटिंग, टीशर्ट की छपाई ,फोटोग्राफी ,ब्यूटी पार्लर ,आइसक्रीम ,अगरबत्ती बनाना आदि यह सभी लघु उद्योग के अंतर्गत ही आते हैं।

लघु उद्योगों में सतना जिले का योगदान (Satna district contribution in small scale industries):-

सतना जिला मध्य प्रदेश राज्य के विंध्याचल पठार पर स्थित है ।जिला विंध्याचल और सतपुड़ा श्रेणी की पहाड़ियों के बीच स्थित है। यह जिला 23.58 डिग्री उत्तरी अक्षांश से 25.12 डिग्री के बीच स्थित है।

जिला में खनिज संसाधन विशाल है जैसे चूना पत्थर, गेरू ,बॉक्साइट ,सफेद मिट्टी ,लेटराइट, माइनर मिनरल्स जैसे रेत ,मुर मुरूम, फ्लोर स्टोन और साधारण पत्थर आदि जिसे कई उद्योगों में इस्तेमाल किया जा सकता है। जिले में विशाल वन संपदा है। जिले का कुल क्षेत्रफल 7502 वर्ग किलोमीटर है। इसमें से कई भाग जंगल ही है ,जो कि लघु उद्योग के लिए उपयुक्त है ।जंगलों से बिल्डिंग वुड्स, जलाऊ लकड़ी और मूल्यवान औषधीय पौधों का उत्पादन किया जाता है। जिससे वन आधारित उत्पाद प्राप्त होता है तथा ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार का सृजन बेहतर होता है ।यहां की आबादी की आजीविका जंगल पर निर्भर करती है तथा कुटीर उद्योग जैसे लकड़ी का कार्य, दवाइयां बनाना ,फर्नीचर, बीड़ी बनाना ,टोकरी बनाना इत्यादि जैसे कई छोटे स्तर पर कार्य होता है और यह लघु उद्योग कई लोगों को जीविका प्रदान करता है।

महिला उद्यमिता विकास की समस्याएं (Problems of Women Entrepreneurship Development):-

वर्तमान समय में महिलाएं हर क्षेत्र में सफलता पूर्वक कार्य कर रही हैं, किंतु उद्योग व व्यवसाय का क्षेत्र किसी के लिए भी आसान नहीं है और इसके लिए उद्यमी को उतने ही कठिन व परिश्रम लगन व समय प्रदान करना पड़ेगा जैसा कि वे किसी अन्य क्षेत्र में सफलता के लिए चाहते हैं। फिर भी महिलाओं के लिए इन क्षेत्रों में आने के लिए कुछ समस्याएं सामने आयी वे समस्याएं इस प्रकार हैं:-

【I】सर्वसामान्य समस्याएं (COMMON PROBLEMS)

- विचार का चयन व दोषपूर्ण नियोजन
- दुर्बल संरचना
- कमजोर प्रबंधन तथा कम उत्पादन
- कमजोर गुणवत्ता
- श्रम समस्याएं
- कौशल का अपर्याप्त प्रशिक्षण
- क्षमता का कम उपयोग
- कमजोर संगठन व अपर्याप्त संपर्क
- रणनीति तथा अभिप्रेरणा का अभाव
- सूचनाओं के संग्रहण की समस्या

【 II 】बाह्य समस्याएं(EXTERNAL PROBLEMS)

- परंपरागत विचारधारा
- साहसी मनोवृत्ति का अभाव
- शिक्षा प्रणाली
- अपर्याप्त सरकार सुविधाएं
- अनुकूल वातावरण का अभाव
- अधोसंरचनात्मक समस्याएं

【III】वित्तीय समस्याएं (FINANCIAL PROBLEMS)

- पूंजी उपयोग की समस्या

◆ न्यूनतम पूंजी लागत की समस्या

◆ वित्तीय दूरदर्शिता

◆ विपणि करारोपण

◆ आर्थिक सत्ता के सामाजिक उपयोग की समस्या

【IV】प्रशासनिक समस्याएं (ADMINISTRATIVE PROBLEMS)

◆ निरीक्षण समस्या

◆ सरकारी नीति तीन

◆ भ्रष्टाचार, लालफीताशाही व नौकरशाही

◆ निर्देशन का अभाव तथा प्रतिस्पर्धी वातावरण

◆ नवप्रवर्तन की समस्या

◆नए मूल्यों व परंपराओं में उचित सामंजस्य की समस्या

◆समय व जोखिमप्रबंधन की समस्या

【 V】सामाजिक समस्याएं (SOCIAL PROBLEMS)

◆ सामाजिक लाभ को न्यूनतम रखने की समस्या

◆ सामाजिक वातावरण के प्रति संचेतना

◆ सामाजिक नवप्रवर्तन की समस्या

◆ उचित प्रशिक्षण की समस्या

◆ पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था

◆ पारिवारिक जिम्मेदारी व शिक्षा का अभाव

◆ जानकारी तथा अनुभव का अभाव

◆ वितरण व गतिशीलता की समस्या

उद्यमिता संबंधी समस्याओं के समाधान (Remedies For The Problems Of Entrepreneurship):-

●**नीतिगत उपाय:**केंद्र व राज्य सरकार द्वारा महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कई नीतिगत उपाय किए गए हैं।

●**संरचनात्मक सुधार:**प्रत्येक विभाग में महिला उद्यमियों के लिए पृथक प्रकोष्ठ स्थापित किया जाना चाहिए,जिससे महिला उद्यमिता कार्यक्रम को अधिक प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने और उनका मूल्यांकन करने में मदद मिलेगी।

●महिला उत्पीड़न पर रोक तथा महिला अधिकारियों द्वारा अधीक्षण

●नए तंत्रज्ञान से परिचय तथा स्व सहायता समूह का गठन।

●**महिला सशक्तिकरण:** सूचना व अनुभव की कमी, आत्मविश्वास की कमी, सशक्तिकरण का अभाव, बैंकिंग अनुभव हीनता, तकनीकी प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण का अभाव हल कर महिला सशक्तिकरण हेतु कदम उठाना चाहिए।

●**सरकार द्वारा की जाने वाली उपायोजना:** महिलाओं के परंपरागत ज्ञान के अनुरूप उनकी आर्थिक क्रियाओं को सहायता प्रदान करनी चाहिए, इसके लिए शासकीय प्रयास आवश्यक है।

● **नए तंत्रज्ञान से परिचय:** नए तंत्र ज्ञान से उन्हें अवगत कराना चाहिए।

●**महिलाओं के साथ भेदभाव नहीं:** सरकारी नीतियों कानूनों तथा नियमों में महिला उद्यमियों के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए।

● **महिला संघो का निर्माण:**सभी आर्थिक पुनर्रचना तथा संरचनात्मक समायोजन से संबंधित नीतियों एवं कार्यक्रमों को अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को प्रभावित करते हैं अतः उन पर ध्यान देना चाहिए।महिला उद्यमियों को संगठित करने तथा संगठन की शक्ति को महसूस करने हेतु अनुकूल वातावरण निर्माण करना चाहिए।

● **समानता को बढ़ावा:** लिंगभेद से संबंधित संशोधनों के निष्कर्षों को अपनाकर समानता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

●**कमजोर वर्ग की महिलाओं को विशेष कार्यक्रम:** कमजोर वर्ग की महिलाओं को स्वावलंबी अथवा आत्मनिर्भर बनाने वाले कार्यक्रमों को सहायता प्रदान करना चाहिए।

● **लोचशील कार्यक्रम:** महिलाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर संशोधन कार्यों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

●**महिला प्रतिनिधियों की भागीदारी:** महिला उद्यमियों के विकास कार्यक्रमों के निर्माण में महिला उद्यमियों के प्रतिनिधियों की राय लेनी चाहिए।

• **सहभागी भावना का विकास:** विभिन्न विकास कार्यों का परस्पर सहयोग तथा सहभागिता के आधार पर संचालित किया जाना चाहिए।

शोध की आवश्यकता (Need For This Research):-

हमारे द्वारा विश्वविद्यालय में जाने पर यह ज्ञात हुआ कि उद्यमिता पर शोध कार्य हो चुका है परंतु लघु उद्योग में कार्यरत महिला उद्यमियों (जो की सतना में अधिकांश है) पर शोध कार्य अभी तक नहीं हुआ है मैं भी एक महिला हूं इस कारण मुझे यह शोध करने में गर्व होगा।

अतः मेरे द्वारा इस शोध को करने का मुख्य कारण अपने देश जिले संभाग में उपस्थित हर वह महिला जो कुछ करना चाहती है, हमारे शोध के माध्यम से अभिप्रेरित हो और एक सफल महिला उद्यमी बने, जिससे हमारे जिले को व राष्ट्र को उन पर गर्व हो।

उपसंहार

इस अध्ययन में इस बात में कोई शक नहीं है कि महिलाएं कुछ न कुछ करने को तैयार रहती हैं स्वतंत्र रूप से। शायद इसके लिए महिला उद्यमियों को अधिक शिक्षा की आवश्यकता है, अधिक मार्गदर्शन, उचित वातावरण, आवश्यक बुनियादी ढाँचा आंतरिक शक्ति, भावना और प्रतिबद्धता की भावना की आवश्यकता है।

References

1. Annual report & Website of Ministry of Women and Child Development - www.wcd.nic.in/ .
2. Annual report & Website of Ministry Of Corporate Affairs - Government of India - www.mca.gov.in
3. Annual report & Website of Welcome to department of commerce, Government of India https://commerce.gov.in/
4. Annual report & Website of Allocation Of Business | Ministry of Finance | GoI https://www.finmin.nic.in/allocation_business
5. Entrepreneurship Development Kailash Pushak Sadan ISBN 81-7327-114-3 Dr Arun Gangelen, Dr. Jinendra Kumar Jain
6. Entrepreneurial Thinking by David C. Valliere
7. International Entrepreneurship, Antonella Zucchella, Birgit Hagen, Manuel G. Serapio

8. Essentials of Entrepreneurship Second Edition, by Robert A. Baron, Keith M. Hmieleski

9. Entrepreneurship in Theory and Practice, Suna Løwe Nielsen, Kim Klyver, Majbritt Rostgaard Evald, Torben Bager